Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 07, July- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जयपुर जिले के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति बहुल क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की कुपोषण की स्थिति व प्रभाव का अध्ययन

शोधार्थी
किरण कंवर

शोध निर्देशिका
प्रो0 अंशु भाटिया

जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर (राज.)

''द स्टेट ऑफ वर्ल्ड्स चिल्ड्रन[1] 2019'' के अनुसार विश्व में 5 वर्ष तक की उम्र के प्रत्येक 3 बच्चों में से एक बच्चा कुपोषण अथवा अल्पवजन की समस्या से ग्रस्त है। पूरे विश्व में 200 मिलियन तथा भारत में प्रत्येक दूसरा बच्चा कुपोषण से किसी न किसी रूप से ग्रस्त है।

राष्ट्रीय पारिवारिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण[2]–4 (NFHS-4) के आँकड़े बताते हैं कि देश में कुपोषण की दर घटी है, लेकिन न्यूनतम आमदनी वर्ग वाले परिवारों में आज भी आधे से ज्यादा बच्चे (51 प्रतिशत) अविकसित और सामान्य से कम वजन (49 प्रतिशत) के हैं। आज भारत में दुनिया के सबसे अधिक अविकसित 4.66 करोड़ और कमजोर 2.55 करोड़ बच्चे मौजूद है। यूनिसेफ की नई रिपोर्ट The State of the World's Children 15Oct2019: Children Food and Nutrition बताती है कि छः महिने से दो साल की उम्र के हर तीन में से दो बच्चों को ऐसा आहार नहीं दिया जा रहा है, जिससे उनके तेजी से बढ़ते शरीर और मस्तिष्क को मदद मिले। इन हालात में बच्चों के मस्तिष्क का समुचित विकास ना हो पाने, सीखने की क्षमता कमजोर होने, प्रतिरोधक क्षमता कम रह जाने, संक्रमण बढ़ने जैसे खतरे पैदा हो रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष की नई रिपोर्ट दर्शाती है कि सेहतमंद आहार का अभाव ऐसे बच्चों की संख्या लगातार बढ़ा रहा है। अधिकांश बच्चे सेहतमंद आहार इसलिए नहीं खा रहे हैं, क्योंकि उनके पास विकल्प ही नहीं है। रिपोर्ट बताती है कि विश्व भर में 14 करोड़ 90

लाख बच्चे नाटेपन का शिकार है या फिर आयु के अनुरूप उनकी लम्बाई बहुत कम है। 5 करोड़ से ज्यादा बच्चे ऐसे हैं जो इतने अल्पपोषित हैं कि उनकी लम्बाई के हिसाब से वे बेहद पतले हैं। 34 करोड़ बच्चे जरूरी विटामिन और पोषक तत्वों जैसे विटामिन 'ए' और आयरन की कमी के शिकार हैं, 4 करोड़ से ज्यादा बच्चे अधिक वजन या मोटापे का शिकार है। ऐसे बच्चों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

यूनिसेफ, डब्ल्यू.एच.ओ, संयुक्त बाल कुपोषण अनुमान अंतर–एजेन्सी समूह[3] हर दूसरे वर्ष प्रत्येक संकेतक के लिए व्यापकता और संख्याओं के वैश्विक और क्षेत्रीय अनुमानों को अद्यतन करता है। 2023 संस्करण के लिए प्रमुख प्रसार सामग्री में स्टंटिंग और ओवरवेट के लिए 2000–2022 से वैश्विक, क्षेत्रीय और देश के रूझान शामिल है। सभी देशों में से केवल एक तिहाई ही 2030 तक स्टंटिंग से प्रभावित बच्चों की संख्या को आधा करने के लिए ट्रेक पर है और कई देशों में 2030 तक अधिक वजन के लिए 3 प्रतिशत व्यापकता के लक्ष्य को प्राप्त करने की उम्मीद है। कुपोषण की यह स्थिति जिसमें पोषक तत्वों की मात्रा अपर्याप्त या बहुत अधिक होती है। जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याऐं उत्पन्न होती है। इसमें शामिल पोषक तत्व कैलोरी, कार्बोहाईड्रेड, विटामिन, प्रोटीन या खनिज है।

भारत सरकार द्वारा प्रारम्भ की गई योजनाऐं–भारत सरकार ने भारत में कुपोषण की उच्च दर की समस्या से निपटने के लिए कई योजनाएं शुरू की है।

1. **एकीकृत बाल विकास योजना (1975)** –इस योजना का लक्ष्य समूह महिलाएं और 6 वर्ष से कम आयु के बच्चे हैं। यह योजना महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा क्रियान्वित की जाती है।

2. **राष्ट्रीय पोषण नीति (1993)** – इसे महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा प्रारम्भ किया गया था व सभी के लिए इष्टतम पोषण प्राप्त करना था।

3. **मध्यान्ह भोजन योजना (1995)** –इस योजना का लक्ष्य समूह 6 वर्ष से 14 वर्ष की आयु के बच्चे हैं।

4. **राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (2013)** – राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन और राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा क्रियान्वित किया जाता है।

5. **राष्ट्रीय पोषण मिशन**– इस योजना का उद्देश्य वर्ष 2022 तक भारत को कुपोषण मुक्त बनाना है। इसका लक्ष्य गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताएं, बच्चे और किशोर है। कुपोषण को 2% जन्म के समय कम वजन वाले बच्चों को 2% तथा एनीमिया को 3%कम करने का लक्ष्य रखा है। वर्ष 2022 तक जनसंख्या में अविकसित बच्चों के अनुपात को 25%तक कम करना इसका उद्देश्य है।

कुपोषण का मुख्य कारण ताजा फल, सब्जियाँ, फलियाँ, मांस, दूध, दही आदि खाद्य पदार्थों का अभाव है। कई परिवार न तो इसका खर्च उठा सकते हैं और न ही इसकी पहुँच उनके पास है। वयस्को और बच्चों में मोटापे के तेजी से बढने का कारण सस्ते दामों पर उपलब्ध खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ हैं जिनमें वसा चीनी और नमक की मात्रा अधिक होती है, अधिक वजन की समस्या गरीब और अमीर दोनो देशों में व्याप्त है।

पोषण ट्रेकर रिपोर्ट[5] 4 अप्रेल 2024 के अनुसार राजस्थान में 1 लाख 94 हजार कुपोषित बच्चे है, सबसे ज्यादा उदयपुर में है। पोषण ट्रैकर रिपोर्ट[5] के अनुसार सबसे अधिक 12976 कुपोषित बच्चे उदयुपर में लिस्टेड हुए है सबसे मे कुपोषित बच्चे 2246 जैसलमेर में पाए गए हैं। महिला एवं बाल विकास विभाग की और से वर्ष 2018 से पोषण अभियान योजना शुरू की गई थी। जिसके अंतर्गत आंगनबाडी केंद्रो के जरिए पोषण व्यवस्था के लिए निगरानी की जा रही है। बच्चों में कुपोषण की समय पर पहचान के लिए जिले के सभी आंगनबाडी केंद्रों पर मातृ एवं शिशु के स्वास्थ्य के लिए निगरानी व उपकरणों से मॉनिटरिंग की जाती है। इसी रिपोर्ट के अनुसार जयपुर जिले में कुल 7985कुपोषित बच्चे है और 2474 बच्चे गंभीर कुपोषित है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 07, July- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शोध विषय :–जयपुर जिले के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति बहुल क्षैत्र के प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में कुपोषण की स्थिति व प्रभाव का अध्ययन

शोध के उदेश्य निम्नांकित है –

1. जयपुर जिले के अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति बहुल क्षेत्र के प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के नियमित शारीरिक परीक्षण की आवृति।
2. जयपुर जिले के अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति बहुत क्षेत्र के प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियो के स्वास्थ्य समस्याओं के निवारण हेतु प्रयासों का अध्ययन करना।

समग्र एवं न्यादर्शः– जयपुर जिले में स्थित चार तहसील क्षैत्रों यथा बस्सी, आमेर, जमवारामगढ़, सांगानेर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत, शिक्षकों को अध्ययन की जनसंख्या है तथा न्यादर्श हेतु 35 प्राथमिक विद्यालयों मे कार्यरत 109 शिक्षकों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया है।

तालिका–1

विद्यार्थियों के नियमित शारीरिक परीक्षण की आवृति

क्रम सं.	शारिरीक परीक्षण की आवृति	तहसील				
		जमवारामगढ़	सांगानेर	आमेर	बस्सी	योग
1	वर्ष में एक बार	5	2	12	7	26
		17.24%	25.00%	92.31%	15.91%	27.66%
2	वर्ष में दो बार	6	5	1	36	48
		20.69%	62.50%	7.69%	81.82%	51.06%
3	वर्ष में तीन बार	0	0	0	1	1
		0.00%	0.00%	0.00%	2.27%	1.06%
4	वर्ष में चार बार	18	1	0	1	20
		62.07%	12.50%	0.00%	2.27%	21.28%

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 07, July- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि जयपुर जिले के चयनित तहसील के विद्यालयों के प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियो के सामान्य स्वास्थ का परीक्षण वर्ष में दो बार होता है, कुल शिक्षकों में से 51.06 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार विद्यालय की और से विद्यार्थियों का वर्ष मे दो बार सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण कराया जाता है, जमवारामगढ़ तहसील के 20.69 प्रतिशत, सांगानेर के 62.50 प्रतिशत, आमेर के 7.69 प्रतिशत तथा बस्सी के 81.82 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार विद्यालय की और से वर्ष में दो बार सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण कराया जाता है। जमवारामगढ़ तहसील के 17.24 प्रतिशत, सांगानेर के 25.00 प्रतिशत, आमेर के 92.31 प्रतिशत तथा बस्सी के 15.91 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार वर्ष में केवल एक बार ही विद्यार्थियों का सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण कराया जाता है, बस्सी ब्लॉक के 2.27 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार वर्ष में तीन बार विद्यार्थियों का सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण कराया जाता है। जमवारामगढ़ ब्लॉक के 62.07 प्रतिशत, सांगानेर के 12.50 प्रतिशत तथा बस्सी के 2.27 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार उनके विद्यालयों मे वर्ष में चार बार विद्यार्थियों का सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण कराया जाता है।

तालिका–2
स्वास्थ्य समस्याओं के निवारण हेतु प्रयास अभिमत

क्र.सं.	प्रयास	तहसीलें				
		जमवारामगढ़	सांगानेर	आमेर	बस्सी	योग
1	पौष्टिक भोजन	29	8	13	44	94
		100.00%	100.00%	100.00%	100.00%	100.00%
2	स्वास्थ्य परीक्षण	29	8	13	44	94
		100.00%	100.00%	100.00%	100.00%	100.00%
3	सरकारी चिकित्सालय में निःशुल्क उपचार	29	8	13	44	94
		100.00%	100.00%	100.00%	100.00%	100.00%

तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि जमवारामगढ़ के चयनित विद्यालयों के 100 प्रतिशत अध्यापकों के अनुसार स्वास्थ्य समस्याओं के निवारण हेतु विद्यालय में पौष्टिक भोजन दिया जाता है, सांगानेर के चयनित विद्यालयों मे कार्यरत 100 प्रतिशत अध्यापक, आमेर तहसील के चयनित विद्यालयों में कार्यरत 100 प्रतिशत अध्यापक, बस्सी के 100 प्रतिशत अध्यापकों के अनुसार विद्यालय में विद्यार्थियों के स्वास्थ्य समस्याओं के निवारण हेतु पौष्टिक भोजन विद्यार्थियों को दिया जाता है। चयनित तहसीलों जमवारामगढ़, सांगानेर, आमेर, बस्सी के विद्यालयों मे कार्यरत 100 प्रतिशत अध्यापकों के अनुसार विद्यार्थियों का समयबद्ध स्वास्थ्य परीक्षण कराया जाता है, जयपुर जिले की चयनित तहसील जमवारामगढ़, सांगानेर, आमेर और बस्सी के प्राथमिक विद्यालयों मे कार्यरत 100 प्रतिशत शिक्षकों के मतानुसार आवश्यकता पड़ने पर विद्यार्थियों का सरकारी चिकित्सालय में निःशुल्क उपचार कराया जाता है।इस अवलोकन से जयपुर जिले के चयनित तहसील के प्राथमिक विद्यालयों की कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामान्य परीक्षण के माध्यम से समस्याओं के निवारण हेतु विद्यालय प्रशासन एवं प्रबंधक द्वारा किये जाने वाले प्रयासों पर प्रकाश डाला गया है।

- इन कैंप मे ना केवल विद्यार्थियों की स्वास्थ्य जाँच होती है अपितु सामान्य स्वास्थ्य से सम्बन्धी किसी समस्या का निदान होने पर असके निवारण हेतु आवश्यक दिशा–निर्देश एवं दवाएं भी उपलब्ध कराई जाती है, बच्चों को आयरन तथा अन्य पोषक तत्वों की गोली दी जाती है, पेट मे होने वाले कीड़ो हेतु कृमि निवारक दवा दी जाती है।
- विद्यार्थियों तथा उनके अभिभावकों को इस सन्दर्भ मे आवश्यक परामर्श दिये जाते है। वर्ष में कम से कम एक बार शिक्षक–अभिभावक मीटिग होती है जिसमें अभिभावकों को विद्याथियों की शैक्षणिक प्रगति की सूचना दी जाती है तथा शैक्षणिक तथा पारिवारिक समस्याओं हेतु परामर्श के अतिरिक्त विद्यार्थियों के स्वास्थ्य एवं स्वच्छता सम्बन्धी आवश्यक परामर्श दिए जाते है।
- विद्यार्थी के स्वास्थ्य की नियमित मॉनिटरिंग की जाती है।

- लगभग तीन दशकों से विद्यालयों में मध्यांतर भोजन उपलब्ध कराया जाता है, जिसकी गुणवता एवं पौष्टिकता हेतु सरकार द्वारा निर्धारित मानकों की पालना की जाती है।
- मध्यांतर भोजन मे बच्चों को सामान्य भोजन के अतिरिक्त फल व दूध भी वितरित किये जाते हैं जो कि पोषण संबंधी आवश्यकताओं को काफी हद तक परिपूरित करते है।
- मध्यातर भोजन मे प्रतिदिन भिन्न व्यंजन वितरित किये जाते है, जिसमें विद्यार्थियों की रूचियों एवं स्वास्थ्य का सम्मिश्रण होता है, प्रत्येक दिवस का डाइट चार्ट बनाया जाता है, जिसमे सभी आवश्यक पोषक तत्व सुनिश्चित किये जाते है तथा इसी डाइट चार्ट के अनुसार भोजन का निर्माण एवं वितरण किया जाता है।
- प्राथमिक स्तर पर बहुत कम बच्चे स्क्ताल्पता से पीड़ित नजर आते हैं।
- विद्यालय में स्वास्थ्य जागरूकता हेतु विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, जैसे–हाथ धोने संबंधी प्रशिक्षण, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों, नुक्कड नाटक के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता विकसित करना इत्यादि।
- विभिन्न टीकाकरण कैंप के माध्यम से बच्चों को विभिन्न बीमारियों से बचाने हेतु भी प्रयास किये जाते है।
- टीकाकरण के कारण बच्चों में खसरा संबंधी समस्याएं नहीं पाई जाती हैं तथा दस्त संबंधी समस्याएं भी नगण्य है।
- आवश्यकता पड़ने पर प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधा विद्यालय स्तर पर उपलब्ध रहती है तथा विशेष परिस्थिति में निकटवर्ती राजकीय चिकित्सालय मे बच्चों को ले जाकर इलाज उपलब्ध कराया जाता है।
- सभी शिक्षकों के अनुसार इन प्रयासों के परिणाम स्वरूप विद्याथियों के सामान्य स्वास्थ्य में सुधार हुआ है।

निषकर्षः—प्रस्तुत शोध में प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि जयपुर जिले के अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति बहुल क्षैत्रों के चयनित तहसीलों में कुपोषण जैसी कोई समस्या नहीं पाई गई। उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि विद्यालयों में कम से कम एक बार, अधिकतम चार बार विद्यार्थियों का सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण कराया जाता है जो कि विद्यार्थियों की स्वास्थ्य सम्बन्धी देखभाल हेतु पर्याप्त है, तथा विद्यालय प्रशासन विद्यार्थियों के सामान्य स्वास्थ्य के प्रति जागरूक है और विद्यालय मे होने वाले स्वास्थ्य परीक्षण के दौरान आने वाली समस्याओं के सन्दर्भ मे विद्यालय प्रशासन जागरूक रहता है तथा पौष्टिक भोजन के अतिरिक्त टीकाकरण एवं विशेष स्वास्थ्य सुविधाओं के माध्यम से बच्चों की पोषण एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करता है।

सन्दर्भ :—

1.https://www.unicef.org/reports/stste of worlds children 2019

2.https://rehiips.org/nfhs/fastsheet-fhs-4.shtm/

3.https://data.unicef.org>.resoueces

4.https://byjus.com>malnutrition

5.https://www.bhaskar.com>news